Close **Participants (5)**

P Poonam Rathi (me, host)

D1 Debanjali 1593

R1 Roshni 1558

SK Sunita Kumari 1542

GA Galaxy A70s

Invite Mute All Unmute All

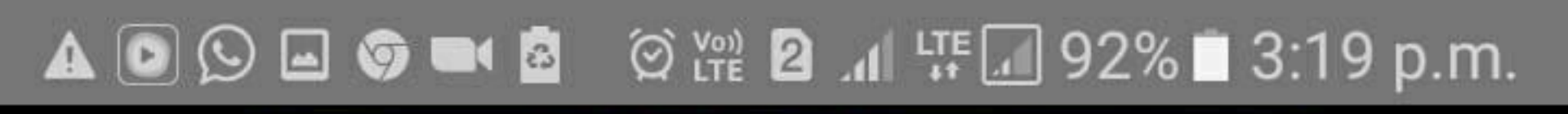

92% 3:19 p.m.
Poonam Rathi
Palak Bhardwaj
Roshni 1558
Debanjali 1593

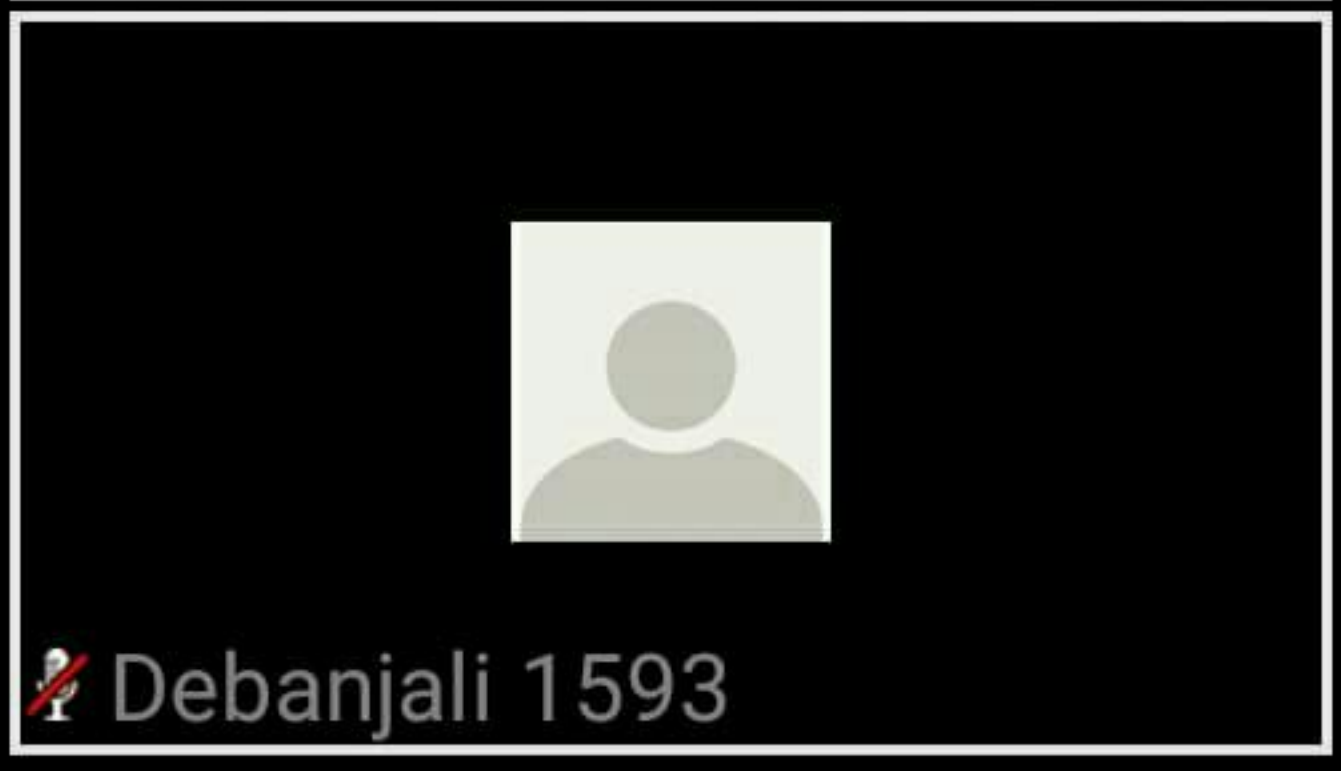

90% 3:23 p.m.

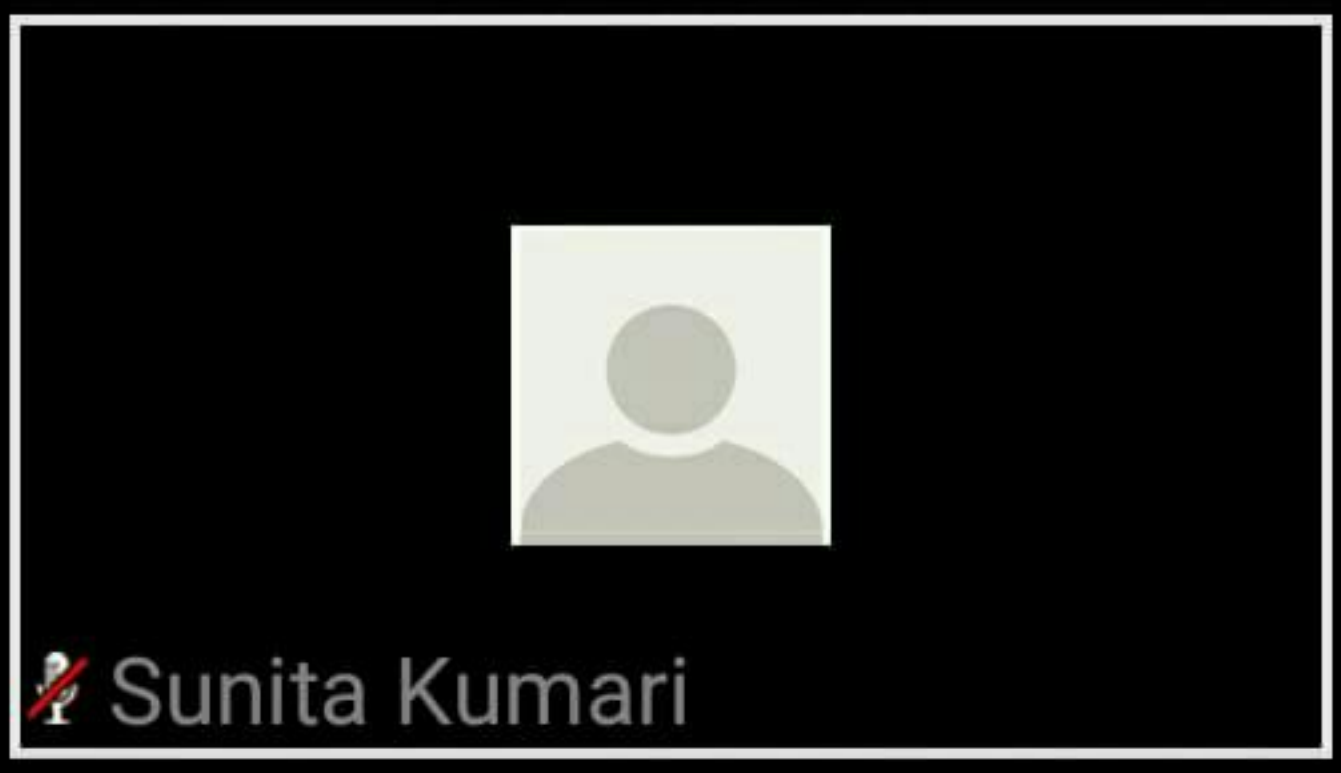

बीच क्रिया-प्रतिक्रिया साथ-साथ चलती रहती है अर्थात् प्रतिपुष्टि तुरंत मिल जाती है। लिखित रूप में संदेश को सम्प्रेषित करने और प्रतिपुष्टि प्राप्त करने में समय का अंतराल होता है। समय की अवधि संदेश की प्रकृति पर और प्रापक की भौतिक स्थिति पर निर्भर करती है। कई बार संदेश पर तुरंत प्रतिक्रिया कर दी जाती है किंतु कई बार विचार-विमर्श के उपरांत उसका उत्तर दिया जाता है। ऐसे ही प्रापक यदि किसी ऐसे स्थान या परिवेश में है जहाँ सामान्य रूप से संदेश को भेजना कठिन हो तो संदेश भेजने और उसकी प्रतिपुष्टि प्राप्त करने में समय अधिक लगता है। अतः लिखित रूप में सम्प्रेषण एक लम्बी समय-आधारित प्रक्रिया है।

प्राचीन काल में लिखित माध्यमों एवं साधनों के अभाव में मौखिक सम्प्रेषण ही प्रचलित था। नारद जी द्वारा देवताओं की सूचनाओं को एकत्रित कर वितरित करना, संजय द्वार धृतराष्ट्र को युद्ध का आँखों देखा हाल सुनाना, कंस को आकाशवाणी का सुनाई पड़ना आदि पौराणिक काल के सम्प्रेषण के माध्यम थे। मानव सभ्यता के विकास के साथ निरन्तर सम्प्रेषण के माध्यम विकसित एवं परिवर्तित होते रहे। अतः मौखिक सम्प्रेषण में व्यक्ति, परस्पर मिलकर या टेलीफोन, कंप्यूटर के माध्यम से दूसरे व्यक्ति के साथ सम्प्रेषण करता है। लिखित रूप में भोजपत्र एवं कपड़े पर, पक्षियों के पैरों में पत्र बाँधना आदि से आरम्भ कर व्यक्ति आज पत्र, ई-मेल एवं सूचना प्रौद्योगिकी के अन्य उपकरणों का सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में प्रयोग करता है।

व्यक्तिगत सम्प्रेषण दो प्रकार का होता है– आत्मगत और बाह्यगत या अन्तर्वैयक्तिक।

(1) ***आत्मगत सम्प्रेषण***– आत्मगत सम्प्रेषण एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसकी परिधि में व्यक्ति स्वयं होता है। इसमें वक्ता और श्रोता या प्रेषक और प्रापक दोनों एक ही व्यक्ति होता है। इसके अन्तर्गत भाव, विचार, अनुभव, प्रभाव, आत्म-निरीक्षण, चिंतन, मनन, पूजन, अर्चन आदि सभी सम्मिलित हैं। बाह्यगत या अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण की नींव आत्मगत सम्प्रेषण के समाप्त होने पर रखी जाती है। किसी अन्य तक कोई बात सम्प्रेषित करने से पहले यह समझना आवश्यक है कि व्यक्ति स्वयं क्या कहना चाहता है। अतः अनेक सन्दर्भों में आत्मगत सम्प्रेषण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है।

(2) **बाह्यगत या अन्तर्वैयक्तिक**–जब एक व्यक्ति द्वारा सम्प्रेषित संदेश दूसरे व्यक्ति द्वारा सीधे ग्रहण किया जाता है, तब वह बाह्यगत या अन्तर्वैयक्तिक

(ख) वैयक्तिक और सामाजिक सम्प्रेषण

इस तथ्य के सम्बन्ध में कोई संदेह नहीं है कि सम्प्रेषण सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य की व्यक्तिगत और सामाजिक आवश्यकता है। ज्ञान-विज्ञान, अनुसंधान और विकास की दिशाओं का मूल केन्द्र व्यक्ति और समाज होता है। सम्प्रेषण की प्रक्रिया को भी यदि देखा जाए तो उसके केन्द्र में व्यक्ति और समाज ही है। वस्तुतः सम्प्रेषण की आवश्यकता व्यक्ति को व्यक्ति और व्यक्ति को समज से जोड़ने की सहज, नैसर्गिक वृत्ति के कारण हुई। अतः कहा जा सकता है सम्प्रेषण का मूल आधार व्यक्ति और समाज का अंतःसम्बन्ध है। वैसे तो व्यक्ति और समाज एक-दूसरे के अभिन्न अंग है किन्तु सम्प्रेषण की प्रकृति को यदि देखा जाए तो व्यक्ति और समाज के स्तर पर सम्प्रेषण के भिन्न-भिन्न आयाम मिलते हैं।

सम्प्रेषण एक भाषिक व्यवहार है जिसका प्रयोग प्रेषक, लेखक या वक्ता और प्रापक, पाठक या श्रोता के रूप में व्यक्ति के द्वारा किया जाता है। किन्तु भाषा किसी एक व्यक्ति की नहीं होती सम्पूर्ण समाज की होती है। भाषा व्यक्ति की सीमाओं के पार समाज के व्यापक धरातल पर कार्य करती है। व्यक्ति किसी भाषाई समाज का सदस्य ही होता है। अतः व्यक्ति की भाषिक क्षमता और कुशलता व्यक्तिगत और सामाजिक सम्प्रेषण का आधार बनती है।

व्यक्ति की अन्तश्चेतना में निहित विचार और भाव उसकी भाषा और बाह्य-व्यवहार को संचालित करते हैं। ये व्यक्ति के निजी एवं आत्मगत स्वरूप के निर्माण का आधार भी होते हैं। वे तत्त्व जो व्यक्ति की समाज और बाह्य जगत में अलग पहचान बनाते हैं वे व्यक्ति के सामाजिक पक्ष का आधार होते हैं। जैसे– आयु, लिंग, परिवार, वर्ग, शिक्षा, सम्बन्ध, पद, व्यवसाय आदि। सम्प्रेषण की प्रक्रिया में जितना व्यक्ति का आंतरिक जगत महत्त्वपूर्ण होता है। उतना ही उसका बाह्य जगत या समाज भी सम्प्रेषण को प्रभावित करता है। कहने का तात्पर्य है कि सम्प्रेषण के दो प्रमुख धरातल हैं– व्यक्ति और समाज। और इस दृष्टि से सम्प्रेषण के दो प्रकार हैं– व्यक्तिगत और सामाजिक।

(i) वैयक्तिक सम्प्रेषण– जिस सम्प्रेषण प्रक्रिया के मूल में व्यक्ति होता है। वह व्यक्तिगत सम्प्रेषण कहलाता है। व्यक्तिगत सम्प्रेषण मौखिक और लिखित दोनों रूपों में हो सकता है। मौखिक रूप में वक्ता और श्रोता दोनों के

05/05/2020 (34)

सम्प्रेषण कहलाता है। दो व्यक्तियों के मध्य होने वाले वार्तालाप को इसके अन्तर्गत रखा जा सकता है। ये वार्तालाप आमने-सामने भी हो सकता है और टेलीफोन, कंप्यूटर आदि संचार माध्यमों की सहायता से भी हो सकता है। बाह्यगत या अन्तर्वैयक्ति सम्प्रेषण में दोनों व्यक्तियों के निजी व्यक्तित्व, उनके परस्पर सम्बन्ध एवं सामाजिक पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण एवं प्रभावी कारक होते हैं। जैसे– संतान का माता-पिता के साथ, अन्य सम्बन्धियों के साथ, मित्रों के साथ, कार्यालय में अधिकारी या अधीनस्थ कर्मचारी के साथ सम्प्रेषण का स्वरूप भिन्न-भिन्न होगा।

विशेषताएँ–व्यक्तिगत सम्प्रेषण की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं।

(अ) **आत्मीयता** व्यक्तिगत सम्प्रेषण की प्रमुख विशेषता है। व्यक्ति का व्यक्ति के साथ सीधा संवाद आत्मीयता और निकटता का बोध कराता है।

(आ) **गोपनीयता** उसकी दूसरी प्रमुख विशेषता है। दो व्यक्तियों के मध्य होने वाली बातचीत उन्हीं तक सीमित रहती है। किसी अन्य का न तो उसमें हस्तक्षेप होता है और न ही प्रभाव।

(इ) **स्पष्टता** भी व्यक्तिगत सम्प्रेषण की एक अन्य विशेषता है। आमने-सामने या एक ही के साथ सम्प्रेषण में क्रिया-प्रतिक्रिया के रूप में अस्पष्टता की गुंजाइश कम होती है। व्यक्ति अपनी शंकाओं का समाधान शीघ्र कर लेता है।

(ई) **तात्कालिकता** से तात्पर्य है कि सम्प्रेषण प्रक्रिया व्यक्तिगत स्तर पर तुरंत पूर्ण हो जाती है। विशेष रूप से मौखिक सम्प्रेषण में व्यक्ति का संदेश तुरंत प्रापक तक पहुँच जाता है और उसकी प्रतिक्रिया भी तुरंत प्रोषक को प्राप्त हो जाती है। लिखित सम्प्रेषण अवश्य कुछ समय की मांग करता है।

सीमाएँ– व्यक्तिगत सम्प्रेषण की कुछ सीमाएँ भी हैं–

(अ) इसकी सबसे बड़ी सीमा यह है कि यह एक व्यक्ति तक ही सीमित रहती है। अधिक लोगों तक यह कार्य नहीं करता। कुद विद्वान यद्यपि एक छोटे समूह को भी व्यक्तिगत सम्प्रेषण में रखते हैं जिससे तुरंत प्रतिक्रिया या प्रतिपुष्टि प्राप्त की जा सके।

(आ) व्यक्तिगत सम्प्रेषण एक व्यक्ति के निजी विचारों तक ही सीमित रहता है जिसमें संदेश के कुछ पक्षों के छूटने की संभावना बनी रहती है।

(इ) व्यक्ति के व्यक्ति के साथ वार्तालाप में मतभेद एवं विवाद की स्थिति बन सकती है। एक व्यक्ति के द्वारा दूसरे व्यक्ति के समाने कही गई